Sixteenth Loksabha

an>

Title: Need to revive MTNL.

श्री अरविंद सावंत (मुम्बई दक्षिण) : माननीय अध्यक्ष महोदया, मैं इस सदन में निरन्तर एमटीएनएल की सेवाएं कैसे खराब हो रही हैं, इसके बारे में बार-बार बोलता आया हूं। आज आप कॉल करो तो वन वे कॉल हो जाता है और कॉल्स ड्रॉप हो जाती हैं। दूसरी तरफ प्राइवेट कंपनियां फोर जी, फाइव जी की बात कर रही हैं। सरकारी कंपनियां ये सेवाएं अच्छी तरह से नहीं दे पा रही हैं। उसका मूल कारण यह है कि ये दोनों कंपनियां घाटे में चल रही हैं। कल-परसों यहां बैंकरप्सी और इंसॉल्वेंसी का बिल आया था। उस बिल पर सरकार ने जो नीति अपनाई है, भूषण सिल्क के बारे में हमारे सहयोगी सदस्य ने कहा कि अगर सरकार मदद नहीं करती तो कंपनी डूब जाती। लोगों के रोजगार जाते। वही नीति सरकार अगर एमटीएनएल और बीएसएनएल के बारे में अपनाए तो वहां भी वह कंपनी आगे बढ़ेगी।

माननीय अध्यक्ष महोदया, यह बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा है क्योंकि इसमें भेदभाव हो रहा है। सरकार बीएसएनएल की तरफ थोड़ा ध्यान दे रही है, लेकिन एमटीएनएल की तरफ पूरा ध्यान नहीं दे रही है। अभी थर्ड टी.आर.सी के बारे में भी, वेतन के बारे में भी सरकार ने डी.ओ.टी. को लिख दिया कि दोनों कंपनियां घाटे में हैं। सरकार एक कंपनी के लिए लिख रही है कि इनको देना है, लेकिन एमटीएनएल के बारे में बात नहीं कर रही है।

दूसरे, जो कंपनी घाटे में गई है, वह आर्थिक सहायता न मिलने के कारण घाटे में गई है। इसलिए मेरा सरकार से निवेदन है कि सरकार उनको ज्यादा से ज्यादा धन दे दे और सरकार यदि आर्थिक सहायता करे तो वे दोनों कंपनियां उभरकर आएंगी।

अंत में, जो हमारा मैनेजमेंट वहां बैठा है, अगर वह निष्क्रिय है, तो सरकार इसकी सीवीसी जांच करवाए। मुझे लगता है कि उनकी निष्क्रियता के कारण सॉबोटिज हो गया है। सरकार कहती है कि हमने ओएफसी दे दिया, लेकिन वह तो नहीं दे रहे हैं। इसी स्थिति में अगर उसकी जांच की जाए तो यह भी पता चलेगा कि कौन उसके ऊपर सॉबोटिज कर रहा है। अगर ये तीनों काम हो जाएं तो कंपनियां उभरकर आएंगी। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष:

श्रीमती वी.सत्यबामा,

डॉ. कुलमणि सामल,

श्री भैरों प्रसाद मिश्र,

श्री रवीन्द्र कुमार जेना,

श्री राहुल शेवाले,

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे,

कुंवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल और

श्री विनायक भाऊराव राऊत को श्री अरविंद सावंत द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।